B.A. History Hon's, Part-I
Paper: II, Unit-I, Date: 18.09.2020 Lecture No.: 17
Lesson: पुनर्जागरण

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ होता है, "फिर से जागना"। 14वीं और 17वीं सदी के बीच यूरोप में जो सांस्कृतिक व धार्मिक प्रगति, आंदोलन तथा युद्ध हुए उन्हें ही पुनर्जागरण कहा जाता है। उसके फलस्वरूप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवीन चेतना आई। यह आन्दोलन केवल पुराने ज्ञान के उद्धार तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उस युग में कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में नवीन प्रयोग हुए। नए अनुसंधान हुए और ज्ञान-प्राप्ति के नए-नए तरीके खोज निकाले गए। उसने परलोकवाद और धर्मवाद के स्थान पर मानववाद को प्रतिष्ठित किया।

पुनर्जागरण वह आन्दोलन था जिसके द्वारा पश्चिम के राष्ट्र मध्ययुग से निकलकर आधुनिक युग के विचार और जीवन-शैली अपनाने लगे, यूरोप के निवासियों ने भौगोलिक व्यापारिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्रों में प्रगति की, इस युग में लोगों ने मध्यकालीन संकीर्णता छोड़कर स्वयं को नयी खोजों, नवीनतम विचारों तथा सामाजिक सांस्कृतिक एवं बौद्धिक उन्नति से सुसज्जित किया। साहित्य, कला, दर्शन, विज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, समाज और राजनीति पर से धर्म का प्रभाव समाप्त हो गया। पुनर्जागरण उस बौद्धिक आन्दोलन को रोम और यूनान की प्राचीन सभ्यता-संस्कृति का पुनरुद्धार है, नयी चेतना को जन्म दिया।

कुस्तुनतुनिया का पतन: 1453 ई॰ में उस्मानी तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया पर अधिकार कर लिया। कुस्तुनतुनिया ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र था। तुर्कों की विजय के बाद कुस्तुनतुनिया के विद्वान भागकर यूरोप के देशों में शरण लिए। प्राचीन ज्ञान के प्रतिश्रद्धा के साथ-साथ नवीन जिज्ञासा उत्पन्न हुई। यही जिज्ञासा पुनर्जागरण की आत्मा थी। कुस्तुनतुनिया के पतन का एक और महत्वपूर्ण प्रभाव हुआ। यूरोप और पूर्वी देशों के बीच व्यापार का स्थल मार्ग बंद हो गया। इसी क्रम में कोलंबस, वास्को डिगामा और मैगलन ने अनेक देशों का पता लगाया।

प्राचीन साहित्य की खोज: तेरहवीं तथा चौदहवीं शताब्दी में विद्वानों ने प्राचीन साहित्य को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। इनमें पेट्रार्क, दाँते और बेकन के उल्लेखनीय है। पेट्रार्क की लेखनी के चलते ही उन्हें मानवतावाद का पिता कहा गया।

मानववादी विचारधारा का प्रभाव: यूरोप की मध्यकालीन सभ्यता कृत्रिमता और कोरे आदर्श पर आधारित थी, सांसारिक जीवन को मिथ्या बतलाया जाता था। यूरोप के विश्वविद्यालयों में यूनानी दर्शन का अध्ययन-अध्यापन होता था।

धर्मयुद्ध का प्रभाव: लगभग दो सौ वर्षों तक पूरब और पश्चिम के बीच धर्मयुद्ध चला। धर्मयुद्ध के योद्धा पूर्वी सभ्यता से प्रभावित हुए। आगे चलकर इन्हीं योद्धाओं ने यूरोप में पुनर्जागरण की नींव मजबूत की। सामंतवाद का ह्रास: सामंती प्रथा के कारण किसानों, व्यापारियों, कलाकारों और साधारण जनता को स्वतंत्र चिन्तन का अवसर नहीं मिलता था। व्यापार के विकास ने एक नए व्यापारी वर्ग को जन्म दिया।

पूरब से सम्पर्क: जिस समय यूरोप के निवासी बौद्धिक दृष्टि से पिछड़े हुए थे, अरब वाले एक नयी सभ्यता-संस्कृति को जन्म दे चुके थे। अरबों का साम्राज्य स्पेन और उत्तरी अफ्रीका तक फैला हुआ था।

मध्यकालीन पंडितपंथ की परम्परा: अरबों से प्राप्त ज्ञान को आधार मानकर यूरोप के विद्वानों ने अरस्तू के अध्ययन पर जोर दिया। प्राचीन साहित्य को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया गया। इस विचार पद्धति में अरस्तू के दर्शन की प्रधानता थी।

कागज तथा मुद्रण कला का अविष्कार: पुनर्जागरण को आगे बढ़ाने में कागज और मुद्रणकला का योगदान महत्वपूर्ण था। कागज और मुद्रणकला के अविष्कार से पुस्तकों की छपाई बड़े पैमाने पर होने लगी।

कला: जिस प्रकार यूरोप के विद्वानों ने 14वीं सदी से लेकर 17वीं सदी तक प्राचीन रोमन एवं यूनानी साहित्य के प्रति बड़ी अभिरुचि दिखायी उसी प्रकार कलाकारों एवं शिल्पियों ने भी प्राचीन ललित कलाओं से प्रेरणा प्राप्त की एवं संतति के लिए नये आदर्श से इसका विकास किया। मध्ययुगीन यूरोप की कला मुख्यतः ईसाई धर्म से संबंधित थी, परन्तु साहित्य एवं प्राचीन सभ्यता के प्रभाव स्वरूप पंद्रहवीं एवं सोलहवीं सदियों में यूरोपीय कला का महान रूपांतर व परिवर्तन हुआ। कला के क्षेत्रों में स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला एवं संगीत में प्राचीनता के आदर्श अपनाये जाने लगे एवं अद्वितीय उन्नति हुई। मध्ययुग में जहाँ यूरोप में भाषाओं का प्रारंभिक विकास हुआ।

धार्मिक क्रांति व प्रोटेस्टेंट धर्म का उत्थान: सोलहवीं सदी के प्रारम्भ में यद्यपि सामान्यतः ईसाईयों पर कैथोलिक धर्म का प्रभाव अक्षुण्ण बना रहा, परन्तु सांस्कृतिक पुर्नउत्थान के परिणामस्वरूप सर्वसाधारण जनता में स्वतंत्र चिन्तन एवं धार्मिक विषयों का वैज्ञानिक अध्ययन प्रारम्भ हो गया था। सांस्कृतिक पुर्न उत्थान के परिणामस्वरूप यूरोप के विभिन्न राज्यों में लोक भाषाओं एवं राष्ट्रीय साहित्य का विकास आरम्भ हुआ। अब सदियों से प्रचलित कैथोलिक धर्म के निर्देशों एवं अधिकारों का पालन करने के लिए अब लोग तैयार नहीं थे। मार्टिन लूथर द्वारा जर्मन भाषा में 'बाईबिल' धर्म-ग्रन्थ का अनुवाद एवं प्रकाशन धर्म-सुधार एवं प्रोटेस्टेंट आन्दोलन के लिए सबसे महत्वपूर्ण एवं सहायक कारण सिद्ध हुआ।

विभिन्न क्षेत्रों में पुनर्जागरण: 'रिनेशां' का अर्थ 'पुनर्जागरण' होता है। मुख्यतः यह यूनान और रोम के प्राचीन शास्त्रीय ज्ञान की पुनः प्रतिष्ठा का भाव प्रकट करता है। यूरोप में मध्ययुग की समाप्ति और आधुनिक युग का प्रारम्भ इसी समय से माना जाता है। इटली में इसका आरम्भ फ्रांसिस्को पेट्रार्क (1304-1367) जैसे लोगों के काल में हुआ। 1453 में जब कुस्तुनतुनिया पर तुर्की ने अधिकार कर लिया, तो वहाँ से भागनेवाले ईसाई अपने साथ प्राचीन यूनानी पांडुलिपियाँ पश्चिम लेते गए। पोप पंचम द्वारा रोम की विजय (1527) के पश्चात पुनर्जागरण की भावना आल्प्स के पार पूरे यूरोप में फैल गई।

हम यह निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि पुनर्जागरण सचमुच वर्तमान युग के आरंभ का प्रधान चिह्न था। दोनों आंदोलनों प्राचीन परंपराओं से प्रेरणा लेते थे और नए सांस्कृतिक मूल्यों का निर्माण करते थे।

□ शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग